International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
August- 2020, Volume-7, Issue-4
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

उच्च शिक्षा प्राप्त स्तरीय छात्रों का जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता का आंकलन

Rajeev Roy
Research Scholar
Deptt. Of Education
B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

Dr. Mahjabeen Khanam
Professor & Head
Deptt. of Psychology
Jamuni Lal College, Hajipur, Vaishali

सार–

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या आज के सम्पूर्ण विश्व की एक विराट समस्या है। न केवल भारत जैसे विकासशील राष्ट्र वरन समस्त विकसित राष्ट्र भी पर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभावों से त्रस्त हैं। पर्यावरण प्रदूषण वास्तव में विकास तथा जनसंख्या वृद्धि का सह–प्रभाव है। विकास की अंधाधुंध दौड़ में प्राकृतिक साधनों के उपयोग करने के लिए मानव प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहा है, तथा जनसंख्या वृद्धि प्रकृति के इस दोहन को और भी अधिक बढ़ा देती है। किसी भी राष्ट्र के विकास और समृद्धि के लिये सबसे जरूरी तत्व शिक्षा है। यह ज्ञान और प्रकाश की अंतहीन यात्रा है जो मानवतावाद के विकास के लिए नये रास्ते खोलती है तथा ऐसे प्रबुद्ध नागरिकों का निर्माण करती है जो एक समृद्ध खुशहाल और मजबूत राष्ट्र की रचना करें। शिक्षा को एक ऐसे उपकरण के रूप में मान्यता दी गयी है जिसकी सहायता से समाज में परिवर्तन व विकास के अभीष्ट लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान समय में देश की मुख्य चार समस्यायें हैं– जनाधिक्य, अशिक्षा, दरिद्रता, प्रदूषण। ये समस्याएँ एक दूसरे को स्वाभाविक रूप से सहयोग प्रदान करती हैं। इन समस्त समस्याओं में जनाधिक्य की समस्या सर्वाधिक विकराल है। शिक्षा के प्रसार के बिना हम ना तो जनसंख्या की समस्या का समाधान कर सकते हैं और न ही समाज से गरीबी, बीमारी, पिछड़ापन जैसी समस्याओं का पूर्ण समाधान निरक्षरता को दूर किये बिना सम्भव है।

प्रस्तावना–

मनुष्य प्राचीन काल से ही प्रकृति पर निर्भर रहा है। वह जीवित रहने के लिये जंगली फल–फूल खाता और जंगली जानवरों एवं पेड़ों की छाल को वस्तु के रूप में प्रयोग करता था और गुफाओं में रहा करता था। किन्तु जैसे–जैसे उसकी बुद्धि का विकास होता गया, वह अपनी आवश्यक्तानुसार अपनी सुख–सुविधाओं के क्षेत्र में कार्य करना आरम्भ कर दिया। सर्वप्रथम मनुष्य ने निवास स्थान का निर्माण किया फिर खाद्यानों एवं परिवार तथा सुरक्षा की दृष्टि से परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ाना आरम्भ कर दिया और इसी वृद्धि के साथ–साथ प्रकृति के शोषण में भी तीव्रता आती गयी, यही वृद्धि आज जनसंख्या विस्फोट जैसे अभिश्राप का रूप धारण कर लिया है। हमारा भारतीय समाज धार्मिक अवधारणाओं से घिरा हुआ हे प्राचीन भारतीय

साहित्य में स्थान–स्थान पर दस पुत्रो ं के लिये प्राथनाएं की गई है।। जबकी भारत के सबसे प्राचीन ग्रन्थ **ऋग्वेद** में कहा गया है कि "**बहुप्रजा निऋति विवेषः"** (1–164–32) अर्थात अधिक प्रजा (संतान) वाला घोर संकट पाता है। वहीं महाभारत में तो बहुपुत्रक को दान करना अति उत्तम माना है। इससे यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल में की गयी दस पुत्रों की प्रार्थनाएं उस समय के आर्थिक, सामाजिक एव ं राजनीतिक दृष्टीकोण से भले ही उपयुक्त रही हो परन्तु उस समय भी छोटे परिवार के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति का निर्माण होने लगा था। आज जनसंख्या विस्फोट के परिणाम स्वरूप ही बेरोजगारी, महंगायी, भ्रष्टाचार आदि के साथ–साथ प्राकृतिक आपदायें भी अक्सर कहर बरसाने लगी हैं, इन समस्याओं से प्रत्येक व्यक्ति को अवगत कराना तथा इसे नियंत्रित करने के लिये प्रेरित करना अति आवश्यक है।

अतः जनसंख्या शिक्षा एक ऐसा विषय है जो लघुपरिवार के प्रति जागरूकता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, क्योंकि इसके पाठ्यक्रम की संरचना में परिवार नियोजन पर ही नही बल्की विवाह की उचित आयु, परिवार का आकार एवं परिवार कल्याण, जनसंख्या परिवर्तन एवं संसाधन विकास, शिक्षा एवं स्त्री शिक्षा और उत्तदायी जनकत्व आदि जैसे प्रमुख विचारों पर भी मुख्य रूप से बल दिया जाता है।

स्वतंत्रता प्रप्ति के समय विभाजन के पश्चात हमारे देश की कुल जनसंख्या 33 करोड़ थी, जो आजादी के 63 वर्षों के बाद वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 1 अरब, 21 करोड़ 19 लाख हो चुकी है। वर्ष 2021 के आकड़ो के हिसाब से जनसंख्या लगभग 1 अरब, 32 करोड़ 23 लाख तक पहुंच चुकी है। इस प्रकार भारत विश्व में आबादी की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है। विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5 प्रतिशत आबादी भारत में रहती है। चीन 19.4 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान पर है। जनसंख्या विस्फोट द्वारा उत्पन्न समस्याओं से उबरने के लिये सरकार द्वारा विभिन्न योजनायें चलायी जा रही हैं किन्तु ये कोई फलदायी परीणाम नही दे पा रही हैं और न ही इन योजनाओं को सही दिशा मिल रही है ऐसे में यह अतिआश्यक है कि बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित किया जाये।

देश में स्वास्थ्य चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि के कारण मृत्युदर में कमी आयी है। परन्तु जन्मदर उस अनुपात में नही घटा। परिणाम स्वरूप जनसंख्या वृद्धि तीव्र स्तर पर है जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- बाल विवाह
- परिवार नियोजन के साधनों के प्रति आज्ञानता
- विवाह की अनिवार्यता
- धार्मिक अन्धविश्वास
- शरणार्थियो का आगमन
- औसत आयु में वृद्धि

- लिंग के प्रति भेदभाव

अतः उपर्युक्त समस्याओं को देखते हुए **जनसंख्या शिक्षा** की अनिर्वायता स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है भारत में वर्ष 1969 में आयोजित **जनसंख्या शिक्षा पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन कर शिक्षा के महत्व पर बल दिया गया और यह सिफारिश की गयी कि देश के प्रत्येक स्तर पर जनसंख्या शिक्षा दी जानी चाहिए।** यह महत्वपूर्ण बात है कि इस तरह की शिक्षा को पहली बार भारत के राष्ट्रीय सेमिनार में ही **जनसंख्या शिक्षा** का नाम दिया गया। धीरे–धीरे पूरे विश्व में जनसंख्या शिक्षा को मान्यता मिली।

वर्ष 1984 के अर्न्तराष्ट्रिय जनसंख्या सम्मेलन में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अपनाये जाने वाले दृष्टिकोण में परिर्वतन हुए। इसी अवधि में भारत में भी शिक्षा की नयी राष्ट्रीय नीति अपनायी गयी, जिसके द्वारा शिक्षा की भूमिका को पुर्नपरिभाषित किया गया। फलस्वरूप जनसंख्या शिक्षा की संरचना में भी परिवर्तन हुए। जनसंख्या शिक्षा के पाठ्यक्रम की संरचना अब निम्न प्रमुख विचारों पर बल देने लगी :

- परिवार का आकार और परिवार कल्याण
- विवाह की आयु सीमा में वृद्धि
- उत्तरदायी जनकत्व
- जनसंख्या परिवर्तन और संसाधन विकास
- जनसंख्या सम्बन्धी मूल्य और विकास
- महिलाओं की स्थिति की वंछित जानकारी

अतः इन विचारों के सम्बन्ध में समुचित समझदारी विकसित करने के प्रयास किये गये। इसी पृष्ठभमि में आयोजित पर्यावरण तथा विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन मे जनसंख्या पर पर्यावरण के अन्तर्स म्बन्धों को नये ढंग से समझने की आवश्यक्ता पर बल दिया था। इस सम्मेलन के पश्चात दीर्घकालीन विकास के लक्ष्य की प्रप्ति मानव विकास का केन्द्रिक विषय बन गया और यह माना जाने लगा कि विकास कि प्रक्रिया को दीर्घकालीन बनाना मानव समाज के लिए अत्यावश्यक है।

इसीलिए वर्ष 1994 में काहिरा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय जनसंख्या एवं विकास सम्मेलन ने जनसंख्या की विषयवस्तु का विश्लेषण अलग–अलग ढ़ंग से न करके विकास के विभिन्न आयामों के परिप्रेक्ष्य में किया। इस सम्मेलन द्वारा अनुमोदित कार्यक्रम में यह स्पष्ट किया गया कि जनसंख्या स्थिरीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति मात्र जनसंख्या नियंत्रण के कार्यक्रमों द्वारा नही हो सकती। **इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि व्यक्तियों की आवश्यकताओं पर बल दिया जाए। विकास प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है।** निम्नलिखित बिन्दुओ पर ध्यान केन्द्रित करके ही जनसंख्या स्थिरीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।

- लैंगिक समानता
- प्रजनन स्वास्थ्य
- जनसंख्या वितरण
- जनसंख्या तथा सतत् विकास
- परिवार
- शहरीकरण एवं प्रजनन

जनसंख्या वृद्धि से निपटने के लिए **सरकार तथा समाजसेवी** संगठनों द्वारा निम्न प्रयास किये जा रहे हैं:

1. अशिक्षा को दूर करना।
2. स्त्री शिक्षा पर विशेष बल देना।
3. छोटे परिवार को पुरस्कृत करना।
4. धार्मिक अन्ध विश्वासों को दूर करना।
5. नैतिक शिक्षा का प्रचार करना।
6. बाल विवाह पर रोक लगाना।
7. परिवार नियाजे न के साधनों का प्रचार–प्रसार।
8. विवाह सबन्धी कानून का सख्ती से पालन करना।
9. मनोरंजन के साधनों में वृद्धि करना।

जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रमः

देश के प्रत्येक विकास सम्बन्धी कार्यों पर जनसंख्या का सबसे गहरा असर पड़ता है। इसलिये जनसंख्या शिक्षा का कार्यक्रम बनाना जरूरी है। हमारे देश में वर्ष 1951 में **"राष्ट्रीय जनसंख्या नीति"** को स्वीकार किया गया। जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम, जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी नीतियों एव योजनाओं को लागू करने में सहायक होती है। वर्ष 1969 में मुम्बई में जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित राष्ट्रीय गोष्ठी का आयेजन किया गया यह हमारे देश में जनसंख्या शिक्षा को लागू करने में सहायक साबित हुयी। इसी प्रकार से 1970 में भी एक जनसंख्या प्रकोष्ठ की स्थापना की गयी, इसका कार्यक्रम **"राष्ट्रीय अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद"** नईदिल्ली द्वारा आरम्भ किया गया। यह जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित कार्यक्रमों का संचालन करता है। इसके कार्यक्रम का क्षेत्र व्यापक है।, इसके कार्यक्रमों में गोष्ठीयां, कार्यशालायें, प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम निर्माण, अनुसंधान एवम् प्रचार–प्रसार मुख्य हैं। **"एन.सी.ईआर.टी"** का जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ अपना कार्य विभिन्न एजेन्सियों के पूर्ण सहभागिता के साथ कर रहा है। **"संयुक्त राष्ट्र संघ"** की शाखा **(यू.एन. एफ.पी.ए.)** यूनाइटेड नेशन फंड फॉर पापुलेशन एक्टिविटी के सहयोग से हमारे देश की सरकार ने जनसंख्या शिक्षा

कार्यक्रम को देश में तीव्र गति से कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक उपाय किये हैं जिसके परिणामस्वरूप ही जनसंख्या वृद्धि पर कारगर अंकुश लगाया जा सकता है।

यूनाइटेड नेशन फंड फॉर पापुलेशन एक्टिविटी द्वारा जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम–

1. उच्च शिक्षा प्रणाली में जनसंख्या शिक्षा तथा विकास शिक्षा पर यू0जी0सी0, यू0एन0एफ0पी0ए0 परियोजना 2002 के अनुसार जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए **यू0जी0सी0** तथा **यू0एन0एफ0पी0ए0** परियोजना निर्मित की गयी। इस परियोजना के अर्न्तगत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वर्ष **1983** से जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता लाने के लिए तथा जनसंख्या एवं विकास शिक्षा को प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालयों तथा कालेजों को सहायता प्रदान की जाती है।

कार्यक्रम के उद्देश्य–

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विश्वविद्यालय तथा कालेजों में पढ़ने वाले युवकों को तथा उनके माध्यम से समुदाय को जीवन की गुणवता, लिंग–समानता, प्रजनन, स्वास्थ्य, एड्स, समाज तथा राष्ट्र पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों को समझने के योग्य बनाना है।

2. वयस्क साक्षरता कार्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा–

- जनसंख्या और विकास शिक्षा एक संयुक्त परियोजना है जो कि **शिक्षा विभाग**, **मानव संसाधन विभाग**, **भारत सरकार** तथा **यू0एन0एफ0पी0ए0** के लिए अनुबंधित है।
- यह परियोजना निम्नलिखित माध्यमों से राज्यों में तीन स्तरों पर लागू की जा रही हैः
- स्कूल और गैर औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम
- प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम
- उच्च शिक्षा कार्यक्रम (कालेज, विश्वविद्यालय)
- **स्कूल स्तर पर :** मध्य प्रदेश में इस परियोजना को लागू करने के लिए सी0ई0आर0टी0, भोपाल को सौंपा गया है।
- **उच्च स्तर पर :** लागू करने के लिए इस परियोजना को **उज्जैन विश्वविद्यालय** को सौंपा गया है।
- **प्रौढ़ शिक्षा स्तर पर :** इस परियोजना को लागू करने के लिए **प्रौढ़ शिक्षा अनुसंधान केन्द्र, इन्दौर** को सौंपा गया है।

कार्यक्रम के उद्देश्य–

जनसंख्या और विकास शिक्षा परियोजना का लक्ष्य है संसाधन एजेंसी की क्षमताओं को मजबूत करना, ताकि वयस्क शिक्षा कार्यक्रम के घटक जनसंख्या शिक्षा की विभिन्न गतिविधियां जैसे आऊट रिच आदि से एकीकरण किया जा सके।

इस परियोजना के निम्नलिखित घटक हैं:

- जिम्मेदार पितृत्व
- शादी का सही समय
- जनसंख्या और पर्यावरण
- राष्ट्रीय सम्मेलन में जनसंख्या सम्बन्धी विश्वास और परम्पराओं का सम्मेलन
-

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष ने जब वर्ष 1979 में कार्य शुरू किया था तो परिवार नियोजन का साधन अपनाने वाले दम्पतियों की संख्या 20 प्रतिशत थी। वर्ष 2010 में यह अनुपात बढ़कर करीब 61 प्रतिशत हो गया। **संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष** द्वारा एक संयुक्त परियोजना के रूप में 17 जनसंख्या शिक्षा संसाधन केन्द्र स्थापित किये गये हैं। जिसके निम्नलिखित कार्य हैं:

- ये केन्द्र विश्वविद्यालय प्रणाली को तकनीकी सहायता प्रदान करते हैं।
- ये केन्द्र विश्वविद्यालय प्रणाली को पाठ्यक्रम भी उपलब्ध कराते हैं।

इस प्रकार से उर्पयुक्त संस्थायें अपनी योजनाओं में एवं कार्यक्रमों के द्वारा जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से लोगों में जनसंख्या वृद्धि के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रयासरत हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- बन्थिया, जयन्त कुमार महानिदेशक एवं जनगणना आयुक्त भारत (2001) भारत की जनगणना प्रोविजनल पापुलेशन टोटल, नईदिल्ली।
- कोठारी, सी. आर. (1990) रिसर्च मेथाडालिजी, विली इस्टर्न लि0, नई दिल्ली।
- माला दीप सिंह तथा डा0 (श्रीमती) एविस चिन्तामणी (2018) "स्नातक एवं परास्नातक स्तरीय विद्यार्थियों का जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन" डीम्ड यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद।
- पाण्डेय, के. पी. (2006) शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- राज्य शिक्षा संस्थान, उ0 प्र0 (2000) जनसंख्या एवं विकास शिक्षा प्रशिक्षण पैकेज, इलाहाबाद।
- रेड्डी, सी. राम मनोहर (2001) इंडियाज पापुलेशन, दि हिन्दू नई दिल्ली।

- शर्मा, बी. एल. एवं सक्सेना, आर. एन. (2010) यू.जी.सी. शिक्षा शास्त्र, आर. एल. बुक डिपो, मेरठ पृष्ठ सं0 328–332।
- वर्मा, ओ. पी. (2020), "कुमायू पहाडी के शिक्षकों, शिक्षिकाओं एवं छात्रों के जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति" पी.एच.डी. (शिक्षाशास्त्र), कुमायूं, पृष्ठ सं0 32–45।
- जनगणना–2011, प्रोविजनल जनगणना आकड़ें एवं ग्राफ।
- अमर उजाला, (2011) दैनिक समाचार पत्र, दिनांक 2 अप्रैल, पृष्ठ सं01,13 एवं दिनांक 6 अप्रैल, पृष्ठ सं0 1,4।
- अग्रवाल, एस. एन. (1985) इण्डियन पापुलेशन प्राब्लम्स टाटा मैक्ग्राहिल, नई दिल्ली।
- गांगुली, एस. पी. (1973) पापुलेशन एण्ड डेवलपमेन्ट, एस0 चन्द्र एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।
- गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अलका (2008) शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन पृष्ठ सं0 326–336।
- गुप्ता, एस. पी. (2017) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद पृष्ठ सं0 438–446।